

समास - सम् + आस
 पास बैठना

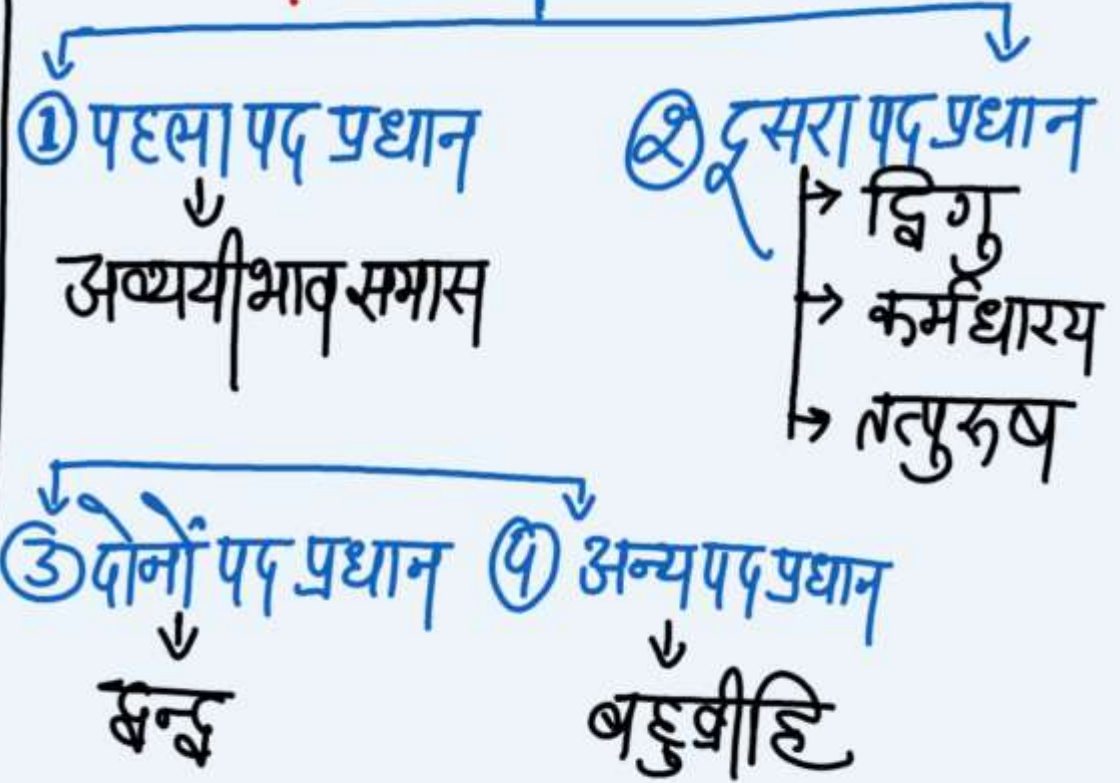
दो शब्दों का परस्पर मेल समास कहलाता है
 अर्थात् जब दो पद एक-दूसरे के पास बिग दिख जाते हैं और
 उनके बीच बिभक्ति चिह्न या पदों का लोप कर दिया जाता
 है, तो उसे समास कहते हैं।

जैसे - रेल पर चलने वाली गाड़ी = रेलगाड़ी
शरण को आगत = शरणागत

समास के भेद— दृष्ट भेद

- ① → अव्ययीभाव समास
- ② → द्विगु समास
- ③ → तत्पुरुष समास
- ④ → कर्मधारय समास
- ⑤ → द्वन्द्व समास
- ⑥ → बहुव्रीहि समास

पद की प्रधानता के आधार भेद—चार



① अव्ययीभाव समास-

जिस समास का पहला पद कोई अव्यय या उपसर्ग हो, और दूसरा पद कोई संज्ञा हो, तथा दोनों पद मिलकर अव्यय के अर्थ का बोध कराए, अव्ययीभाव समास कहलाता है-

जैसे - यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन - प्रत्येक दिन

अव्ययीभाव समास की मूल विशेषताएँ:-

- ① → पहला पद प्रधान
- ② → प्रथम पद अव्यय
- ③ → उपसर्ग युक्त पद
- ④ → पुनरावृत्ति शब्द

अव्ययीभाव समास के दो भेद होते हैं -

① → अव्यय पद पूर्व अव्ययीभाव समास

② → संज्ञा पद पूर्व अव्ययीभाव समास

① अव्ययपदपूर्व अव्ययीभाव समासः—

जिस समस्त पद में
 पहला पद अव्यय या उपसर्ग होता है उसे अव्ययपूर्व पद
 अव्ययीभाव समास कहते हैं—

जैसे— यथाक्रम— क्रम के अनुसार, यथायोग्य— योग्यता के अनुसार
 यथानुसार— जैसा है उसी के अनुसार, यथामति— मति के अनुसार

यथार्थ - अर्थ के अनुसार, टरेक - एक के बाद एक
 आसमुद्र - समुद्र पर्यन्त, प्रत्यारोप - आरोप के बदले आरोप
 यावज्जीवन - जीवन पर्यन्त, बखूबी - खूबी के अनुसार
 यथानियम - नियम के अनुसार, प्रत्येक - हर एक
 समक्ष - आखों के सामने, आमरण - मरने तक
 आजन्म - जन्म रहने तक, आकंठ - कंठ तक

② नामपद पूर्व अव्ययीभाव समास-

जिस समस्त पद में
पहला पद संज्ञा हो और दूसरा पद कोई अव्यय हो,
 तथा सम्पूर्ण पद मिलकर अव्यय के अर्थ का बोध कराए,
नामपद पूर्व अव्ययीभाव समास कहलाता है-

जैसे- जीवनभर- पूरे जीवन, दिनभर- पूरे दिन

पेलभर- पेल भरकर, नियमानुसार- नियम के अनुसार
 निर्देशानुसार- निर्देश के अनुसार, इच्छानुसार- इच्छा के अनुसार,
 दानार्थ- दान के लिए, सेवार्थ- सेवा के लिए,
 हितार्थ- हित के लिए, नित्यप्रति- जो नित्य हो,
 क्रमानुसार- क्रम के अनुसार, प्रश्नानुसार- प्रश्न के अनुसार

अव्ययीभाव समास के अन्य नियम:-

① पुनरुक्ति युक्त पद अव्ययीभाव समास:-

जब किसी संज्ञा पद या अव्यय पद की पूर्ण या अपूर्ण रूप से पुनरावृत्ति हो, तो वहाँ अव्ययीभाव समास होता है-

जैसे- घर-घर- प्रत्येक घर, कानों कान- कान ही कान में
धीरे-धीरे- अत्यधिक धीरे, रातों रात- रातों ही रात में

दिनोंदिन - दिन के बाद दिन / प्रत्येक दिन,
 पास-पास - पास में, दूर-दूर - अत्यधिक दूर,
 गली-गली - प्रत्येक गली, गाँव-गाँव - प्रत्येक गाँव,
 हाथोंहाथ - हाथ ही हाथ में, मारामारी - मारने के बाद मारना
 चला-चली - चलने के बाद चलना, भागमभाग - भागने के बाद भागना

नियम-(ii) जिस समास में पहला पद व, बे, निर्, नि, निस् उपसर्ग से युक्त हों, अव्ययीभाव समास होगा है-

जैसे- वरखूबी-खूबी के सहित, बेवजह-बिना वजह के
 बेवफा-बिना वफा के, बेदाग-बिना दाग के,
 बे-परवाह-बिना परवाह के, निर्विवाद-बिना विवाद के
 निडर-बिना डर के, निधडक-बिना धडक के

नियम-(iii) 'प्रति' उपसर्ग से युक्त पदों का समास विग्रह करते समय शब्द के पहले 'हर/प्रत्येक' जोड़ दिया जाता है-

जैसे- प्रतिक्षण - हरक्षण/प्रत्येकक्षण, प्रतिपल - हरपल

प्रतिदिन - हरदिन/प्रत्येकदिन, प्रत्येक - हर एक

प्रतिशत - हरशत/प्रत्येकसौ, प्रतिवर्ष - हर वर्ष

नियम-(iv) 'यथा' अव्यय से बने शब्दों का विग्रह करते समय शब्द के अन्त में 'के' अनुसार / जैसा या जैसी लिख दिया जाता है -

जैसे - यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार, यथार्थ - जैसा अर्थ है वैसा
 यथामति - मति के अनुसार, यथायोग्य - योग्यता के अनुसार
 यथेष्टच्छा - इच्छा के अनुसार, यथानुसार - जैसा है उसी के अनुसार